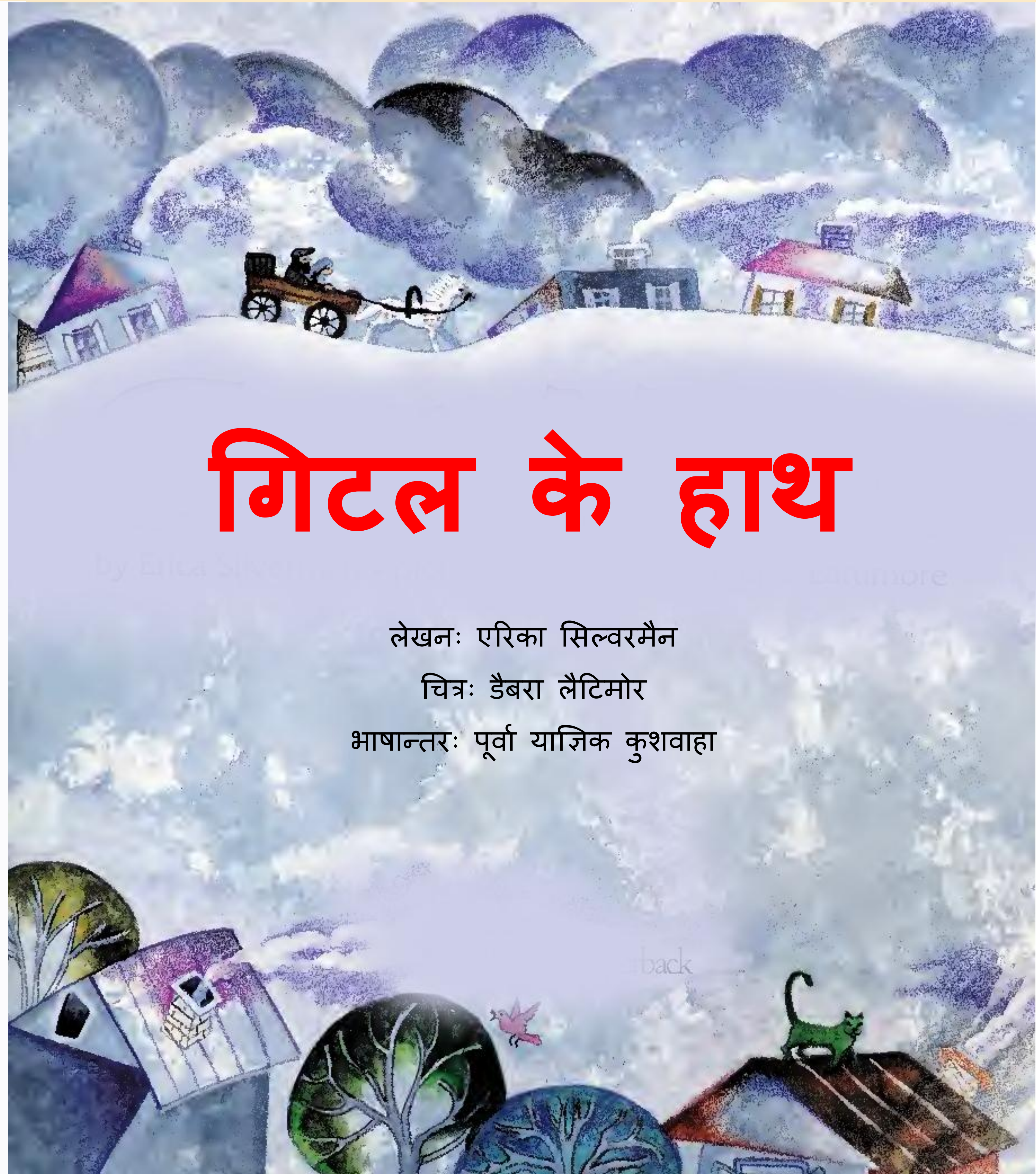
# गिटल के हाथ

लेखनः एरिका सिल्वरमैन

चित्रः डैबरा लैटिमोर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





# गिटल के हाथ

लेखनः एरिका सिल्वरमैन

चित्रः डैबरा लैटिमोर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



मेरे पिता हैरल्ड के लिए व मेरे दादा की स्नेह स्मृति में

-ई.एस.

एरिका के लिए, जिसके सुन्दर हाथों व दिल ने मुझे इस कहानी को चित्रित करने का अवसर दिया, तथा बॉनी व आइलीन को स्नेह व शुक्रगुज़ारी के साथ

-डी.एन.एल.









बहुत समय पहले एक आदमी था जो याकोव पनहारा (पानी लाने वाला) कहलाता था। वह अपनी बेटी गिटल के साथ कार्पाथियन पर्वत की तलहटी में बसे एक श्टैटल (छोटा गाँव) के छोटे से घर में रहता था। याकोव को बोलना बहुत पसन्द था। और चूंकि गिटल एक अच्छी बेटी थी, वह सुनना जानती थी।

वह खाना पकाते समय, अलाव में केक-डबलरोटी सेंकते समय, कशीदाकारी और सिलाई करते समय पिता की बातें सुना करती। वह हमेशा अपने हाथों से काम करती रहती थी। वह चीथड़ों और चिन्दियों को जोड़ अनाथ बच्चों के लिए खिलौने और भिखारियों के लिए गुलूबन्द बनाती थी।



अपने पिता की नज़रों में वह जो कूछ भी करती वह एक करिश्मा ही होता था। पनहारा याकोव जिससे भी मिलता अपनी बेटी की खूब तारीफें करता, बड़ी-बड़ी डींगे हाँकता।

"मेरी बेटी ने मेरे लिए इतना सुन्दर प्रार्थना का शॉल बनाया, जो पैगम्बर अलाइजा के लायक हो," याकोव ने जूते गांठने वाले से कहा।

गिटल के गाल शर्म से लाल हो गए। "वह एक सादा-सा ही शॉल है पापा," उसने धीरे से कहा।

"उसकी बनाई सेवइयों की खीर में जन्नत का स्वाद होता है," याकोव ने पंख उखाड़ने वाले से कहा।

गिटल की आँखें झुक गईं। "साधारण खीर ही तो थी," उसने अपने पिता से कहा।



याकोव ने रब्बाई की बीवी से झुक कर दुआ-सलाम की, तब बोला, -- आपने मेरी गिटल के हाथों का काम देखा है?"

"पापा मेहरबानी करो!" गिटल फुसफुसाई।

याकोव ने अपनी आवाज़ और ऊँची उठाई और बोला, "उसके हाथों से बने मोमबत्तीदानों जैसे आपने कभी देखे तक नहीं होंगे!"

"इतना बड़बोलापन!" रब्बाई की बीवी ने अपनी भौं सिकोड़ी। "अपने शब्दों को सावधानी से बरतो रेब (श्री) याकोव। क्या तुम जानते नहीं कि डींग हाँकना बदकिस्मती लाता है।"

"डींग कौन हाँक रहा है?" याकोव ने पलट कर पूछा। "मेरा एक-एक शब्द सच है।"

रब्बाई की बीवी ने अपनी उंगली हिलाई, "एक बार बोले गए शब्द डिबबुक (दुष्ट आत्माओं) जैसे होते हैं। वे इधर-उधर नाचते हैं। और तमाम परेशानियाँ पैदा करते हैं।"

याकोव हंसा। "क्या बेवकूफी है? मैं शब्दों से नहीं डरता।"



उस साल सर्दियों का मौसम लम्बा खिचा। जब गिटल बसन्त के उत्सव पासओवर (या फसह, एक यहूदी त्यौहार) की तैयारी करने लगी थी बर्फ तब भी धरती पर पसरी थी। अपने शॉल के बावजूद कांपते हुए गिटल ने दीवारें धोईं। उसने उन खास तश्तरियों, प्यालों और बर्तनों को रगड़ कर साफ किया जिनका उपयोग फसह के दौरान किया जाना था। उसने मात्ज़ो (बिना ख़मीर की रोटी) का आटा गूंधा और रोटियाँ बनाने अलाव के पास लाई।



एक दिन जब वह मात्ज़ो ढ़कने के लिए रूमाल को काढ़ रही थी कि उसके पिता दोपहरी का खाना खाने घर आए।

"अरे सर्दियों की फूस खत्म हो चुकी है," उसने उदासी से कहा। "और फूस का व्यापारी पहले के उधारी के चालीस रूबल मांग रहा है, जो मैंने अब तक चुकाए नहीं हैं।"

"क्या हम उसे किसी दूसरी तरह चुका नहीं सकते? सेव बेचने वाले ने एक बार आपको रूबल के बदले सेव दिए थे।" गिटल ने घर में चारों ओर नज़र दौड़ाते कहा।

याकोव ने सिर झुकाया। "मेरे पास ऐसा क्या है जिसकी रेब राया को ज़रूरत होगी? पानी? उसके पास तो खुद का कुंआ है।" अचानक उसकी आँखें चमक उठीं। "बिटिया मेरे साथ चलो।"

याकोव ने अपना घोड़ा छकड़े में जोता और गिटल को रेब रोया के शानदार घर ले गया। "तुम ख़ामोश रहना," उसने गिटल को हुक्म दिया। "मुझे बात करने देना!"

रेब राया ने दरवाज़ा खोला।

"शुभ दिन रेब राया," याकोव ने कहा। "जब आप मेरी बेटी के हाथों का शानदार काम देखेंगे, उसकी सिलाई देख आप खुश हो जाएंगे। और यों मैं आपकी फ़ूस का कर्ज़ उतार सकूंगा।"

"मैं अपना काम एक उम्दा दर्जिन से करवाता हूँ," रेब राया ने जवाब में कहा।



"पर गिटल तो उससे कहीं बेहतर है," याकोव ने हठ से कहा। "वह चीथड़े और धागे से एक बढ़िया मात्ज़ो रूमाल बना सकती है।"

"ओह पापा, नहीं!" गिटल ने मन में सोचा। उसने पिता की आस्तीन खींची।

पर एक बार बोले गए शब्द डिबबुक जैसे होते हैं। वे इधर-उधर नाचते हैं। और तमाम दिक्कतें पैदा करते हैं।

"बेहतर?" फ़ूस के व्यापारी ने कहा। "अगर तुम सच कह रहे हो, तो तुम्हारी बेटी मेरे लिए काम कर सकती है। पर अगर गलत रहे तो मैं तुम्हारा पानी का पीपा ले लूंगा, जिससे तुम्हारी उधारी में से कुछ का तो चुकारा हो सकेगा।"





रेब राया गिटल को अपनी बैठक में ले गए। उसे कपड़े का एक टुकड़ा और धागे की एक गट्टी दी। "मैं घंटे भर बाद लौटूंगा।"

"मेहरबानी से सीने के लिए एक सूई दे दें," गिटल ने कहा।

"तुम्हारे पिता ने सूई की तो कोई बात की ही नहीं थी," रेब राया ने कहा और दरवाज़ा बन्द कर चला गया।

गिटल ने बैठक में उधर-उधर सूई की तलाश की, पर सूई कहीं मिली ही नहीं।

अचनक धुँआकश (चिमनी) से आती फड़फड़ाहट ने उसे चौंका दिया। उसने झांक कर देखा तो पाया कि धुँआकश में एक कपोत फंसा था। उसने हाथ बढ़ाया और सावधानी से उसे निकाला। थरथराता कपोत अपने काले चिकने पंखों को नोच रहा था।

"ओ नन्हे कपोत मैं रूमाल तो बना नहीं सकती, पर तुम्हारी मदद तो कर ही सकती हूँ।" उसने कपोत के राख और कालिख से पुते पंखों को कपड़े से पोंछा।

तब उसने एक खिड़की खोली और कपोत को बाहर उड़ा दिया। जब कपोत उड़ चला गिटल को लगा कि बाहर आँगन में कोई है। "बाहर भला कौन हो सकता है?" उसने मन में सोचा।



कुछ ही देर में दरवाज़ा खुला और रेब राया धमधमाता अन्दर आया, उसके पीछे याकोव था।

"जैसा मैंने साचा था," रेब राया ने कहा। "कोई मात्ज़ो रूमाल नहीं है। पीपा मेरा हुआ!"

"ऐसा हो ही नहीं सकता," याकोव रुंआसा हो बोला।

"पापा मुझे समझाने दो," गिटल ने चिरौरी की।

"तुम ख़ामोश रहो!" याकोव गुर्रा कर बोला। "मैं निपटता हूँ।" वह रेब राया की ओर मुड़ा, "सिलाई-कढ़ाई को छोड़ो, मेरी बेटी सबसे बढ़िया खाना बना सकती है।"

रेब राया ने अपनी आँखें गोल-गोल नचाईं और शान से बोला, "मेरे पास उम्दा रसोईदारनी है।"





"गिटल उससे बेहतर खाना बना सकती है," याकोव ने पक्के भरोसे से कहा। "वह घर में बचे-खुचे सामान से त्यौहार का भोज तैयार कर सकती है।

गिटल ने पिता के कंधे पर थपकी दी। वह फुसफुसाई "पापा . . ."

पर एक बार बोल दिए गए शब्द डिबबुक जैसे होते हैं। वे इधर-उधर नाचते हैं। और तमाम दिक्कतें पैदा करते हैं।

"अगर तुम जो कह रहे हो वह गिटल नहीं कर सकी तो, मैं तुम्हारा छकड़ा ले लूंगा। इससे तुम्हारी उधारी का कुछ चुकारा तो हो सकेगा।"



रसोई में रेब राया ने गिटल को एक अंडा, आधा कप दूध और थोड़ा सा पनीर दिया। तब उसने अपने भंडारघर में ताला लगाया, ओर बोला, “मैं घंटे भर बाद लौटूंगा।”

“मेहरबानी से खाना पकाने के लिए जलावन की लकड़ी तो दे दें,” गिटल ने कहा।

तुम्हारे पिता ने लकड़ी के बारे में तो कुछ कहा ही नहीं।” उसने रसोई का दरवाज़ा बन्द किया, और चलता बना।

लकड़ी को तलाशते समय गिटल को मिंमियाने की आवाज़ सुनाई दी। एक दुबली-पतली बिल्ली खिड़की के कगार पर कूद कर चढ़ आई थी।



“छुटकी बिल्ली, मैं जलावन के बिना कुछ पका ही नहीं सकती, पर तुम्हें कुछ खिला तो सकती हूँ।”

गिटल ने पनीर, दूध और अंडा बिल्ली के सामने रखा और उसे खाते देखती रही। बाहर कहीं से उसने पदचाप सुनी। उसकी आँखों ने पूरे आँगन को छान मारा।

“कोई बाहर है,” गिटल ने बिल्ली से कहा। बिल्ली ने अपनी आँखें झपकीं।



उसी समय रेब राया ने रसोई का दरवाज़ा खोला। याकोव उसके पीछे था।

"जैसा मैंने सोचा था!" फूस का व्यापारी बोला। "छकड़ा मेरा हुआ।"

याकोव उसके पीछे दौड़ा। "मेहरबानी से हमें एक और मौका दें।"

"पापा मुझे बात साफ़ करने दें," गिटल ने कहा।

"यह तुम्हारा ख़ामोश रहने का वक्त है।"

याकोव रेब राया की ओर मुड़ा। "हो सकता है कि पकाने का काम ठीक से न हुआ हो। पर मेरी गिटल बेहद सुन्दर प्याले, तश्तरियाँ और मोमबत्तीदान बना सकती है।"

"पापा, बस करें," गिटल बुदबुदाई। एक बार बोले गए शब्द डिबबुक जैसे होते हैं। | वे इधर-उधर नाचते हैं। और तमाम दिक्कतें पैदा करते हैं।

"ठीक है," रेब राया ने जल्दी से कहा। "तुम जैसा कहते हो अगर गिटल वैसा कर पाती है, तो बेशक वह मेरे लिए काम कर सकती है। पर अगर नहीं कर पाती तो तुम्हारा घोड़ा मेरा होगा और तुम्हार सारा उधार चुक जाएगा।"



रेब राया गिटल को अपने तहख़ाने में ले गया और उसे एक चाँदी का सिक्का दिया। "तुम्हारे पास सूरज डूबने तक का समय है।"

गिटल तहखाने में आगे-पीछे चहलकदमी करने लगी। "बिना छकड़े, बिना पीपे और बिना घोड़े के तो मेरे पिता के पास कुछ भी नहीं बचेगा। काश मैं उनकी मदद कर पाती।" वह यह सोचते खिड़की से बाहर झांकने लगी। अचानक आँगन की परछाइयों से एक काँपता-ठिठुरता भिखारी बाहर निकला।





"मैं अपने पिता की मदद तो नहीं कर पा रही हूँ," गिटल ने कहा। "पर मैं अपको थोड़ी गरमाहट तो दे ही सकती हूँ।" उसने अपना शॉल भिखारी को दे दिया।

भिखारी ने शॉल लिया। तब भिखारी के हाथ हिलाने भर से . . .



वह तहख़ाने में गिटल के सामने था। हरी आँखों वाली बिल्ली उसके पैरों के पास थी और उसके कंधे पर कपोत बैठा था। अचानक एक काम करने की मेज़ उनके सामने थी जिस पर औज़ार और चाँदी की सिल्लियाँ रखी थीं। भट्ठी की लौ धधक कर जल उठी।



बाहर सूरज अपनी राह पर थम गया।

भिखारी ने गिटल को मोमबत्तीदान बनाना, फसह की नमूनेदार तश्तरियाँ बनाना सिखाया। तब उसने तारीफ़ की नज़रों से गिटल को अलाइज़ा का प्याला बनाते देखा।

भिखारी ने गिटल की आँखों में गहराई तक झांका।

गिटल ने इसके पहले किसीकी आँखों में इतनी करुणा नहीं देखी थी। वह समझ गई कि उसके सामने पैगम्बर अलाइजा ही खड़े हैं। “मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा कर सकूंगी?” वह फुसफुसाई।



अलाइजा मुस्कुराए। “अपने हाथों के काम से। अपने दिल की अच्छाई से। और अपने शब्दों की बुद्धिमानी से।” इतना कह वे गायब हो गए।

वे जहाँ पहले खड़े थे वहाँ हवा झिलमिला रही थी। और भट्ठी के पास एक चाँदी का सिक्का पड़ा था।



बाहर सूरज अब पहाड़ों के पीछे डूब गया।

तहख़ाने का दरवाज़ा खुला। रेब राया और उसके पीछे याकोव अन्दर घुसे।

रेब राया की आँखें हैरानी से चौड़ा गईं।

याकोव भी अचरज से अपनी बेटी की बनाई सुन्दर चीज़ें देखने लगा।

"मैंने कहा था ना कि वह बड़ी काबिल है। अरे मेरी बेटी तो. . . "





"तुम्हारी बेटी मेरे लिए काम कर सकती है," रेब राया बोला। "आज ही से! वह चाँदी की चीज़ें बनाएगी और मैं उन्हें बेचूंगा।" उसने बात पक्की करने के लिए हाथ मिलाने के वास्ते अपना हाथ आगे बढ़ाया।

पनहारे याकोव ने भी अपना हाथ बढ़ाया, "मेरी बेटी बखुशी आपके लिए काम करेगी।"

"पापा रुकिए!" गिटल ज़ोर से बोली और दोनों के बीच जा खड़ी हुई। "मैंने अब तक खूब सुना। पर अब आपकी इजाज़त से मैं बोलूंगी।"



पनहारा चौंक कर बेटी को घूरने लगा।

"क्योंकि मेरे पास काढ़ने-सिलने के लिए सूई नहीं थी, न पकाने के लिए जलावन," गिटल ने कहा, "इस आदमी ने आपको धोखा दिया है। अपका पीपा और छकड़ा हड़प लिया है। मैं इसके लिए कभी काम नहीं करूंगी।" इतना कह गिटल ने अपने हाथों से बनाई चीज़ें बटोरीं और बाहर निकलने लगी। याकोव उसके पीछे था।

"अरे रुको तो," फूस का व्यापारी बोला, "तुम अपना पीपा और छकड़ा ले लो। और तुम्हारे घोड़े के लिए और फूस भी।"



"मेरे दोस्त याकोव," उसने आगे जोड़ा, "आख़िर तुम लड़की के पिता हो, तुम उससे कहो कि उसे मेरे लिए काम करना ही होगा।"

याकोव फ़क्र से मुस्कराया। "मेरी बेटी अपने लिए खुद बोलती है," उसने जवाब दिया। "और वह किसी दूसरे से बेहतर बोल पाती है।"





इसके बाद से लोग मीलों दूर बसे गाँवों से गिटल के हाथ की कारीगरी देखने आने लगे। वे उसके बनाए बेहतरीन मोमबत्तीदान, नमूनेदार तश्तरियाँ, और अलाइज़ा प्याले खरीदते।

कहा जात था कि खुद अलाइजा ने गिटल को यह हुनर सिखाया था।

पर यह बात किसीसे कहना मत। क्योंकि बोले गए शब्द डिबबुक से होते हैं। वे इधर-उधर नाचते हैं। और तमाम दिक्कतें पैदा करते हैं।

## कहानी के कुछ शब्द

**पासओवर** - बसन्त में मनाया जाने वाला वह उत्सव जो यहूदियां के मिस्र की गुलामी से निकलने की याद में मनाया जाता है।

**श्टैटल** - पूर्वी युरोप का छोटा गाँव।

**डिबबुक** - शैतानी दुष्ट आत्मा।

**मात्ज़ो** - बिना ख़मीर वाली सपाट रोटी या सूखा क्रैकर जो पासओवर यानी फसह के समय खाया जाता है।

**मात्ज़ो रूमाल** - मात्ज़ो को ढकने के लिए बनाया गया कशीदाकारी वाला रूमाल।

**अलाइजा** - यहूदी लोककथाओं में अलाइजा एक स्नेहालू व जादूई पैगम्बर हैं, जो मुसीबत के समय ग़रीबों और रहमदिल लोगों की मदद करते हैं।

**अलाइजा का प्याला** - एक खास प्याला जो अमूमन चाँदी से बना होत है। उसमें पैगम्बर अलाइजा के लिए शराब परोसी जाती है। पासओवर के भोज के दौरान एक खास समय घर का एक दरवाज़ा खोल कर पैगम्बर अलाइजा को आमंत्रित किया जाता है।

**सेडर** - पासओवर का पवित्र भोज जिसके दौरान पासओवर की कथा पढ़ कर, गा कर सुनाई जाती है और प्रार्थना की जाती है।

**सेडर तश्तरी** - नमूनों से उकेरी गई तश्तरी जिसमें भोज की सामग्री रखी जाती है, ताकि लोग गुलामी के दुख और आज़ादी की ख़ुशी को याद रखें।



एक छोटे-से पोलिश गाँव में पिता द्वारा डींगे हाँकने के बाद गिटल नाम वाली एक किशोरी से कुछ असंभव काम करने को कहा जाता है। हालांकि गिटल के हाथ निराशा ही लगती है, उसकी रहमदिली और नेक काम के कारण पैगम्बर अलाइजा उसे ईनाम देते हैं। यह पासअसेवर का चमत्कार ही तो है।